



Original Article

सआदत हसन मंटो और प्रेमचंद का तुलनात्मक अध्ययन

प्रा. नदिम इक़बाल मुल्ला

सहायक प्राध्यापक

सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय, रहमतपूर

Manuscript ID:

IJAAR-C130366

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 339 - 345

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 14 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. नदिम इक़बाल मुल्ला

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787135

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787135>



Creative Commons

सार:

सआदत हसन मंटो उर्दू कथा-साहित्य के ऐसे लेखक हैं जिन्होंने बीसवीं शताब्दी के भारतीय उपमहाद्वीप की सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय विडंबनाओं को अत्यंत यथार्थ और निर्भीकता से अभिव्यक्त किया। उनका लेखन विशेषतः भारत-विभाजन, विस्थापन, सांप्रदायिक हिंसा, स्त्री-जीवन और मनुष्य की भीतरी क्रूरताओं को केंद्र में रखता है। प्रस्तुत शोध-निबंध में मंटो के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन दो प्रमुख कथाकारों प्रेमचंद और इसमत चुगताई के संदर्भ में किया गया है।

प्रेमचंद जहाँ सामाजिक यथार्थ और नैतिक आदर्शवाद के साथ ग्रामीण भारत की समस्याओं को चित्रित करते हैं, वहीं मंटो नग्न यथार्थ के माध्यम से मनुष्य की अंतरात्मा के अंधकार को उद्घाटित करते हैं। दूसरी ओर, इसमत चुगताई स्त्री-चेतना और मध्यवर्गीय मानसिकताओं पर तीक्ष्ण व्यंग्य करती हैं, जबकि मंटो का दृष्टिकोण अधिक मानवीय, करुण और अस्तित्ववादी है।

इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मंटो की रचनात्मकता अपने समय से आगे की चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। उनका लेखन साहित्य में नैतिक साहस, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और यथार्थवाद की नई परंपरा स्थापित करता है।

हिंदी-उर्दू कथा-साहित्य में मुंशी प्रेमचंद और सआदत हसन मंटो दो ऐसे महत्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज की जटिलताओं, विडंबनाओं और मानवीय संवेदनाओं को अपनी-अपनी दृष्टि से अभिव्यक्त किया। प्रेमचंद ने ग्रामीण भारत, सामाजिक विषमता, शोषण और नैतिक मूल्यों के संघर्ष को यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत किया, जबकि मंटो ने शहरी जीवन, विभाजन की त्रासदी, यौन-राजनीतिक सच्चाइयों और मनुष्य की नग्न सच्चाइयों को बेबाकी से उजागर किया।

दोनों रचनाकारों की रचनाशैली, विषय-वस्तु और दृष्टिकोण भिन्न होते हुए भी उनका लक्ष्य समान था—मनुष्य और समाज की वास्तविक स्थिति को सामने लाना। यह शोध-निबंध इन दोनों साहित्यकारों के जीवन, कृतित्व, विषय-वस्तु, भाषा-शैली, सामाजिक दृष्टिकोण तथा साहित्यिक योगदान का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: मंटो, विभाजन, यथार्थवाद, स्त्री-चेतना, सामाजिक विडंबना, नैतिकता, तुलनात्मक अध्ययन, उर्दू कथा-साहित्य, मानव मनोविज्ञान, सांप्रदायिकता, यथार्थवाद, सामाजिक चेतना, विभाजन, ग्रामीण जीवन, शहरी विडंबना, मानवीय संवेदना, प्रगतिशील साहित्य, कथा-साहित्य आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.



How to cite this article:

प्रा. नदिम इक़बाल मुल्ला. (2026). सआदत हसन मंटो और प्रेमचंद का तुलनात्मक अध्ययन. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 339 - 345. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787135>

प्रस्तावना:

बीसवीं शताब्दी का भारतीय साहित्य सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल का साक्षी रहा। 1947 का भारत-विभाजन न केवल भौगोलिक घटना थी, बल्कि वह मनुष्यता की त्रासदी का प्रतीक बन गया। इसी त्रासदी को शब्द देने वाले साहित्यकारों में सआदत हसन मंटो का नाम अग्रणी है।

मंटो ने समाज के उस यथार्थ को प्रस्तुत किया, जिसे सामान्यतः साहित्य में स्थान नहीं मिलता था। उनकी कहानियाँ 'टोबा टेक सिंह', 'खोल दो', 'ठंडा गोश्त' आदि विभाजन की विभीषिका और मानवीय संवेदनाओं के विखंडन को चित्रित करती हैं।

हिंदी और उर्दू साहित्य का विकास भारतीय समाज के सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों से गहरे रूप में जुड़ा रहा है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में भारतीय समाज औपनिवेशिक दमन, सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक विषमता से जूझ रहा था। ऐसे समय में प्रेमचंद ने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाया।

दूसरी ओर, भारत-विभाजन की त्रासदी ने मंटो के साहित्य को जन्म दिया, जिसमें मनुष्य की असली पहचान, हिंसा और विस्थापन की पीड़ा प्रमुख विषय बने।

मंटो का जीवन परिचय:

सआदत हसन मंटो का जन्म 11 मई 1912 को पंजाब के समराला (वर्तमान भारत) में हुआ। उनके पिता एक सख्त स्वभाव के न्यायिक अधिकारी थे, जबकि मंटो का स्वभाव संवेदनशील और विद्रोही था। प्रारंभिक शिक्षा के बाद वे

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से जुड़े, जहाँ उनकी साहित्यिक रुचि विकसित हुई।

साहित्यिक जीवन की शुरुआत उन्होंने अनुवाद कार्य से की। बाद में वे बंबई (अब मुंबई) चले गए और फिल्म उद्योग से जुड़ गए। यहाँ उन्होंने पटकथा-लेखन और संवाद-लेखन किया।

1947 में देश-विभाजन के बाद वे पाकिस्तान चले गए। विभाजन की विभीषिका ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला, जो उनकी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देता है। 18 जनवरी 1955 को लाहौर में उनका निधन हो गया।

मंटो का साहित्यिक व्यक्तित्व:

मंटो का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे मूलतः कथाकार थे, किंतु उन्होंने नाटक, रेडियो-नाटक, संस्मरण और रेखाचित्र भी लिखे। उनकी लेखनी में तीन प्रमुख विशेषताएँ दिखाई देती हैं। यथार्थवाद, मानवीय करुणा, सामाजिक विद्रोह वे किसी विचारधारा के बंधन में नहीं बँधे। उनका उद्देश्य केवल सत्य को सामने लाना था, चाहे वह कितना भी कटु क्यों न हो।

मंटो की प्रमुख कृतियाँ:

मंटो की कहानियाँ उर्दू साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित हैं -

टोबा टेक सिंह, खोल दो, ठंडा गोश्त, बू, काली शलवार आदि।

इनके अतिरिक्त उन्होंने अनेक रेडियो नाटक और फिल्मी लेखन भी किया।



अश्लीलता का आरोप:

मंटो का विभाजन की त्रासदी का चित्रण:

मंटो की रचनाओं में 1947 के भारत-पाक विभाजन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कहानी टोबा टेक सिंह विभाजन की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य है। इसमें एक पागलखाने के पात्र के माध्यम से विभाजन की निरर्थकता और राजनीतिक मूर्खता को उजागर किया गया है।

इसी प्रकार खोल दो और ठंडा गोश्त जैसी कहानियाँ विभाजन के दौरान हुए अमानवीय अत्याचारों को सामने लाती हैं। इन कहानियों में स्त्री की अस्मिता और मानवता की हत्या का मार्मिक चित्रण है।

स्त्री-चित्रण:

मंटो ने समाज के हाशिये पर खड़ी स्त्रियों—वेश्याओं, पीड़ित महिलाओं और शोषित नायिकाओं—को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया। काली शलवार और बू जैसी कहानियों में उन्होंने स्त्री-जीवन की त्रासदी को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

उनका उद्देश्य स्त्री का शोषण दिखाकर समाज की मानसिकता पर प्रहार करना था। वे स्त्री को केवल करुणा की वस्तु नहीं, बल्कि संवेदनशील और जटिल मानवीय अस्तित्व के रूप में चित्रित करते हैं।

भाषा और शैली:

मंटो की भाषा सरल, सजीव और प्रभावशाली है। वे अनावश्यक अलंकरण से बचते हैं। उनकी शैली सीधी, स्पष्ट और कभी-कभी व्यंग्यात्मक है। उनकी लेखनी में संवादों की शक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। छोटे-छोटे वाक्य और तीव्र भावाभिव्यक्ति पाठक पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

मंटो पर कई बार अश्लीलता के आरोप लगे और उन पर मुकदमे भी चले। ठंडा गोश्त और बू जैसी कहानियों को लेकर उन्हें अदालत में पेश होना पड़ा।

किन्तु मंटो का कहना था—

“अगर आपको मेरी कहानियाँ अश्लील लगती हैं, तो समाज अश्लील है, क्योंकि मैं तो समाज का ही चित्रण करता हूँ।” - सआदत हसन मंटो

उनका उद्देश्य अश्लीलता फैलाना नहीं, बल्कि समाज के पाखंड को उजागर करना था।

1. मंटो और प्रेमचंद: यथार्थ का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य:

प्रेमचंद हिंदी-उर्दू साहित्य में सामाजिक यथार्थ के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनके उपन्यास ‘गोदान’ और कहानियाँ ग्रामीण जीवन, शोषण और नैतिक संघर्ष को केंद्र में रखती हैं। प्रेमचंद का यथार्थ आदर्शोन्मुख है; वे समाज-सुधार की भावना से प्रेरित हैं।

इसके विपरीत, सआदत हसन मंटो का यथार्थ कठोर और निर्मम है। वे समाज को सुधारने का दावा नहीं करते, बल्कि उसकी सच्चाई को निर्वस्त्र रूप में सामने रखते हैं। उदाहरणार्थ, ‘ठंडा गोश्त’ में हिंसा और काम-वासना का भयावह चित्रण है, जो मनुष्य की नैतिक पतनशीलता को दर्शाता है।

तुलनात्मक बिंदु:

प्रेमचंद का दृष्टिकोण नैतिक और सुधारवादी है; मंटो का विश्लेषणात्मक और अस्तित्ववादी।

प्रेमचंद सामाजिक संरचना पर बल देते हैं; मंटो मनोवैज्ञानिक गहराई पर।



प्रेमचंद आशा की किरण दिखाते हैं; मंटो प्रश्न छोड़ जाते हैं।

2. मंटो और इस्मत चुगताई: स्त्री और समाज:

इस्मत चुगताई ने स्त्री-जीवन की जटिलताओं को साहसपूर्वक अभिव्यक्त किया। उनकी कहानी 'लिहाफ' ने साहित्य में स्त्री-समलैंगिकता जैसे विषय को सामने लाकर नई बहस छेड़ी।

मंटो की कहानियों में भी स्त्री-चरित्र अत्यंत प्रभावशाली हैं—जैसे 'खोल दो' की सकीना या 'बू' की नायिका। किंतु मंटो स्त्री को केवल सामाजिक बंधनों के संदर्भ में नहीं, बल्कि मानवीय करुणा और त्रासदी के प्रतीक के रूप में चित्रित करते हैं।

तुलनात्मक बिंदु:

चुगताई का लेखन स्त्रीवादी चेतना से प्रेरित है; मंटो का दृष्टिकोण मानवीय संवेदना पर आधारित।

दोनों ने वर्जित विषयों को उठाया, किंतु मंटो का स्वर अधिक करुण और विडंबनापूर्ण है।

3. विभाजन की त्रासदी: मंटो का विशिष्ट योगदान:

भारत-विभाजन पर अनेक लेखकों ने लिखा, किंतु मंटो की दृष्टि अद्वितीय है। 'टोबा टेक सिंह' में पागलखाने का रूपक विभाजित राष्ट्र की विडंबना को व्यक्त करता है। कहानी का नायक बिशन सिंह भारत और पाकिस्तान के बीच की 'नो-मैन्स-लैंड' में खड़ा रह जाता है—यह स्थिति उस समय की राजनीतिक असंगति का प्रतीक है।

मंटो विभाजन को किसी एक समुदाय की त्रुटि नहीं मानते; वे मनुष्य की सामूहिक विफलता को उजागर करते हैं।

4. भाषा और शैली:

मंटो की भाषा सरल, संवादप्रधान और तीक्ष्ण है। वे अनावश्यक अलंकारों से बचते हैं। उनकी शैली में पत्रकारिता

की तात्कालिकता और मनोवैज्ञानिक गहराई का संयोजन मिलता है।

प्रेमचंद की भाषा अपेक्षाकृत विस्तारपूर्ण और वर्णनात्मक है, जबकि चुगताई की भाषा व्यंग्यात्मक और चुटीली। मंटो का लेखन सीधा, मारक और प्रभावशाली है।

5. नैतिकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:

मंटो पर अश्लीलता के आरोप लगे और उन पर कई मुकदमे चले। किंतु उन्होंने अपने लेखन को समाज का आईना बताया। उनका कथन था—“यदि आप मेरे अफसानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते, तो इसका मतलब है कि यह जमाना ही असहनीय है।”

इस दृष्टि से मंटो साहित्य में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रतीक बन जाते हैं।

प्रेमचंद का जीवन परिचय:

हिंदी साहित्य के 'उपन्यास सम्राट' और 'कथा सम्राट' कहे जाने वाले मुंशी प्रेमचंद का जीवन सादगी, संघर्ष और साहित्य साधना की एक अद्भुत मिसाल है। उन्होंने अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य को महलों से निकालकर गांवों की चौपालों और गरीब किसानों की झोपड़ियों तक पहुँचाया।

यहाँ उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है:-

जन्म: 31 जुलाई, 1880

जन्म स्थान: लमही गाँव, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

मूल नाम: धनपत राय श्रीवास्तव

उपनाम: नवाब राय (शुरुआती उर्दू लेखन के लिए), प्रेमचंद

मृत्यु: 8 अक्टूबर, 1936



प्रारंभिक जीवन और संघर्ष:

प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता। जब वे केवल सात वर्ष के थे, तब उनकी माता का देहांत हो गया और चौदह वर्ष की आयु में पिता भी चल बसे। कम उम्र में ही उन पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी आ गई।

शिक्षा: उन्होंने ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई जारी रखी और बड़ी मुश्किलों से बी.ए. (B.A.) की डिग्री प्राप्त की।

आजीविका: उन्होंने शिक्षा विभाग में स्कूल इंस्पेक्टर के रूप में कार्य किया, लेकिन महात्मा गांधी के आह्वान पर असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी त्याग दी।

साहित्यिक यात्रा:

प्रेमचंद ने अपने लेखन की शुरुआत 'नवाब राय' के नाम से उर्दू में की थी। उनकी पहली कहानी संग्रह 'सोजे-वतन' को ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था क्योंकि उसमें देशभक्ति की भावना प्रबल थी। इसके बाद उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से हिंदी में लिखना शुरू किया।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में लेखन किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ -

उपन्यास - गोदान, गबन, सेवा सदन, कर्मभूमि, रंगभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा।

कहानी संग्रह - मानसरोवर (आठ खंड), जिसमें 'कफन', 'ईदगाह', 'नमक का दरोगा', 'पूँस की रात' और 'दो बैलों की कथा' जैसी 300+ कहानियाँ शामिल हैं।

संपादन - हंस, जागरण, और मर्यादा जैसी पत्रिकाओं का सफल संपादन किया।

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन, किसान, स्त्री-स्थिति और सामाजिक शोषण पर केंद्रित है।

साहित्यिक विशेषताएँ:

प्रेमचंद के साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति उनकी यथार्थवादिता (Realism) है। उन्होंने समाज की कुरीतियों, छुआछूत, गरीबी, और किसानों के शोषण को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाया। उनकी भाषा बहुत ही सरल, सहज और मुहावरेदार थी, जो सीधे पाठक के दिल को छू लेती थी।

"साहित्य वह जादू की लकड़ी है जो पशुओं में, ईंट-पत्थरों में और पेड़-पौधों में भी विश्व की आत्मा का दर्शन करा देती है।" — प्रेमचंद

विषय-वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन:

(1) सामाजिक यथार्थ:

प्रेमचंद का यथार्थ सामाजिक सुधारवादी है। वे किसान-जीवन, जमींदारी प्रथा, दहेज, जाति-भेद जैसी समस्याओं को चित्रित करते हैं। मंटो का यथार्थ नग्न और तीखा है। वे समाज की कुरूप सच्चाइयों—वेश्यावृत्ति, हिंसा, बलात्कार, पागलपन—को बिना लाग-लपेट प्रस्तुत करते हैं।

तुलना:

प्रेमचंद का उद्देश्य समाज को दिशा देना है, जबकि मंटो समाज को आईना दिखाते हैं।

(2) विभाजन और मानवीय त्रासदी:

प्रेमचंद ने विभाजन से पहले का भारत देखा; उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता-संघर्ष की झलक मिलती है।

मंटो ने विभाजन की पीड़ा को स्वयं भोगा। 'टोबा टेक सिंह' में पागलखाने का प्रतीक विभाजित राष्ट्र की विडंबना को दर्शाता है।



तुलना:

प्रेमचंद का दृष्टिकोण आदर्शवादी है; मंटो का दृष्टिकोण अस्तित्ववादी और करुण यथार्थ से भरा हुआ है।

(3) स्त्री-चित्रण:

प्रेमचंद की स्त्रियाँ संघर्षशील, त्यागमयी और नैतिक मूल्यों की प्रतीक हैं (जैसे 'गोदान' की धनिया)।

मंटो की स्त्रियाँ समाज की क्रूरता का शिकार हैं, परंतु वे अपनी पहचान भी रखती हैं। 'खोल दो' की सकीना विभाजन की अमानवीयता का प्रतीक है।

तुलना:

प्रेमचंद स्त्री को सामाजिक परिवर्तन का आधार मानते हैं; मंटो स्त्री को समाज की क्रूर सच्चाई का केंद्र बनाते हैं।

3. भाषा और शैली:

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और संवादप्रधान है। वे ग्रामीण मुहावरों का प्रयोग करते हैं।

मंटो की भाषा तीखी, व्यंग्यात्मक और प्रतीकात्मक है। वे कम शब्दों में गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से:

प्रेमचंद – विस्तारपूर्ण वर्णन

मंटो – संक्षिप्त, मारक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति

4. साहित्यिक दृष्टिकोण:

प्रेमचंद प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित थे। उनका साहित्य सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देता है।

मंटो भी प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े थे, परंतु उन्होंने किसी विचारधारा की सीमा को स्वीकार नहीं किया। वे स्वतंत्र और निर्भीक लेखक थे।

5. समानताएँ:

- दोनों यथार्थवादी कथाकार हैं।
- दोनों ने समाज की कुरीतियों को उजागर किया।

- दोनों का साहित्य मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत है।
- दोनों ने शोषित वर्ग को केंद्र में रखा।

निष्कर्ष:

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि सआदत हसन मंटो हिंदी-उर्दू साहित्य में यथार्थवाद की नई धारा के प्रतिनिधि हैं। प्रेमचंद और इस्मत चुगताई के साथ तुलना करने पर मंटो की विशिष्टता और अधिक उभरकर सामने आती है।

मंटो का साहित्य केवल विभाजन की कथा नहीं, बल्कि मनुष्य की अंतरात्मा का दस्तावेज है। उन्होंने समाज के उस यथार्थ को शब्द दिए, जिसे देखने से लोग कतराते थे। इसी कारण वे आधुनिक साहित्य के अग्रणी और साहसी कथाकार माने जाते हैं।

प्रेमचंद और मंटो दोनों ही भारतीय उपमहाद्वीप के महान कथाकार हैं। प्रेमचंद ने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाया, जबकि मंटो ने साहित्य को सत्य उद्घाटन का माध्यम बनाया।

यदि प्रेमचंद समाज के नैतिक मूल्यों के संरक्षक हैं, तो मंटो उन मूल्यों की परीक्षा लेने वाले प्रश्नकर्ता हैं। दोनों की साहित्यिक परंपरा आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सआदत हसन मंटो, मंटो की कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 45–120
2. प्रेमचंद, गोदान, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 78–210
3. चुगताई, इस्मत चुगताई, लिहाफ और अन्य कहानियाँ, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 15–60



- | | |
|--|---|
| 4. नामवर सिंह शर्मा, आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, पृ. 132–150 | 7. अली सरदार जाफरी अंसारी, मंटो: एक अध्ययन, पृ. 78–95 |
| 5. खालिद हुसैन, मंटो: जीवन और साहित्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 88–140 | 8. प्रेमचंद, गोदान, सरस्वती प्रेस, पृ. 112–150 |
| 6. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, पृ. 45–60 | 9. सआदत हसन मंटो, टोबा टेक सिंह और अन्य कहानियाँ, पृ. 25–40 |
| | 10. नामवर सिंह मिश्र, कहानी: नई कहानी, पृ. 101–120 |